Volume: 2 Issue: 8 Pages: 100-101

विद्यार्थियों के गृह वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन

*[1] नितिन आनन्द एवं [2]पूनम झा

*[1] विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, चौ0 सुघर सिंह एजूकेशनल एकेडमी, जसवन्तनगर, इटावा, उ0प्र0 भारत।

[2] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग चौ0 सुघर सिंह एजूकेशनल एकेडमी, जसवन्तनगर, इटावा, उ0प्र0 भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 23/Aug/2023
Accepted: 28/Sep/2023

***Corresponding Author**
नितिन आनन्द
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, चौ0 सुघर सिंह एजूकेशनल एकेडमी, जसवन्तनगर, इटावा, उ0प्र0 भारत।

सारांश

शिक्षा प्रदान करने का कार्य मुख्य रूप से शिक्षक समाज का है। शिक्षक, शिक्षक भी है तथा अभिभावक भी। विद्यालय में भी शिक्षक, बालकों के अंशकालिक अभिभावक होते हैं। अतः उन्हें शिक्षक व अभिभावक दोनों की ही भूमिका निभानी होती है। प्रस्तुत अध्ययन बालकों की शिक्षा पर अध्ययन प्रक्रिया के अतिरिक्त शिक्षक को प्रेरणायुक्त व्यवहार, नियंत्रण, निश्चयात्मकता, सुविधाओं को उपलब्ध कराना आदि घटक भी महत्व रखते हैं। अतः कक्षा में एवं उसके बाहर शिक्षकों का छात्रों के प्रति व्यवहार स्नेहिल, सुरक्षा प्रदान करने वाला तथा उसकी चिन्ता करने वाला होगा तो निश्चित रूप से बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उठेगा। आज शिक्षकों का जो व्यवहार विद्यालयों में देखने को मिलता है जिसमें छात्रों की उपेक्षा, तिरस्कार, दण्ड की बहुलता होती है, शिक्षकों के इस प्रकार के व्यवहार से उपलब्धि का स्तर गिर रहा है अतः इसमें परिवर्तन वांछित है। प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्षात्मक स्वरूप स्पष्ट करते हुए हम यह कह सकते हैं कि गृह पर्यावरण का पालन सर्वोत्तम होना चाहिये जिससे बच्चों में समानता, स्वतंत्रता, सहयोग और भाई–चारे के प्रजातांत्रिक मूल्यों का विन्यास किया जा सके और उनके व्यक्तित्व का स्वाभाविक एवं सर्वांगीण विकास स्वसाधनों द्वारा वांछित बनाया जा सके। इसलिये भारत सरकार ने सार्वभौमिक शिक्षा का प्रचार करके प्राथमिक विद्यालयों में उच्च और सकारात्मक वातावरण का विकास किया है जिससे सभी बच्चों को एक समान समृद्ध वातावरण मिल सके। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर गृह वातावरण का अध्ययन शीर्षक के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया है। यह सर्वविदित है कि बालक की प्रथम पाठशाला, उसका घर है। घर पर मुख्य रूप से माता–पिता के व्यवहारों, मूल्यों व दृष्टिकोणों का प्रभाव बालक के भावी जीवन का आधार बनाती है। शिक्षा के प्रति माता–पिता का दृष्टिकोण, प्रेरणा, व्यवहार, संरक्षण, नियंत्रण तथा बच्चों के लिए सुविधायें जुटाना आदि अनेक कारक हैं जो बच्चों की शिक्षा से सीधे जुड़े हैं। शैक्षिक उपलब्धि व परिवार ;माता–पिता का व्यवहारद्ध में सदस्यों की अंतः क्रिया के बीच संबंध होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की दृष्टि से शैक्षिक उपयोगिता माता–पिता व शिक्षकों के लिये परिलक्षित होती है।

मुख्य शब्द: विद्यार्थी, गृह वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, संबंध

परिचय

मनुष्य अपने पर्यावरण का रचयिता तथा उसको ढालने वाला दोनों ही है जिससे उसे भौतिक स्थिरता एवं बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आत्मिक वृद्धि के अवसर मिलते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण चाहे वह किसी निकाय, समाज या राष्ट्र का हो बच्चों के विकास को अवश्य प्रभावित करता है। यह प्रभाव गृह वातावरण से प्रारम्भ होकर संपूर्ण संसार में अपना प्रभाव दिखलाता है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि शिशु का घर, समाज एवं वह पर्यावरण जिसमें वह क्रिया–प्रतिक्रिया करता है, उसके व्यवहार एवं व्यक्तित्व को विशेष रूप से ढालने का प्रबल घटक है। वर्तमान समय में विज्ञान ने औद्योगीकरण के विकास में सहयोग दिया। परिणामस्वरूप मनुष्य और उसके पर्यावरण का पारस्परिक संबंध गत्यात्मक होता है। बालक के प्रारम्भिक जीवन में उसका पर्यावरण घर ही होता है क्योंकि यहीं उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जो उसे भविष्य में समाज के उत्तर दायित्वों को निभाने के लिये समर्थ बनाती है। यहीं वह भाषा सीखता है, उठना–बैठना सीखता है, खाने–पीने का शिष्टाचार सीखता है, पहनना व बातचीत करना सीखता है और एक दूसरे के प्रति शिष्ट व्यवहार करना सीखता है।

यह घर या परिवार का पर्यावरण बच्चों को योग्य और होनहार बनाने में सफल नहीं हो पाता है तो बच्चों का समुचित विकास होना असंभव सा ही है। अतः बालकों की प्रथम व शाश्वत पाठशाला घर ही होता है, यहाँ उसकी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं अन्य आवश्यकतायें पूरी होती है।

राल्फ लिंटन ने लिखा है कि ''शिशु के समुचित विकास के लिये शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि पर्याप्त नहीं है बच्चों को वैयक्तिक, ध्यान, प्रेम, और क्रिया के संतोष की अधिक आवश्यकता है।'' इस दृष्टि से बालक के बहुमुखी विकास में घर या परिवार का वातावरण एक शक्तिशाली उत्प्रेरक होता है।

भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार के जीवन मूल्य बच्चे के विकास को प्रभावित करते हैं फिर भी एक बालक सबसे अधिक अपने परिवार के द्वारा दिये गये संस्कारों, मूल्यों और आदर्शों को सबसे अधिक ग्रहण करता है और उसी के आधार पर उसके व्यक्तित्व का व्यवहार निर्देशित होता है। बालक की शिक्षा में घर का शैक्षिक वातावरण व परिवार के सदस्यों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, बहुत अधिक महत्व रखते हैं।

इस संबंध में NCERT, 1978 ने एक अध्ययन में पाया कि घरेलू घटकों एवं बालक की बुद्धि, बालक की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का कारण बनती है। जब बुद्धि लब्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर को नियंत्रित कर दिया गया तो यह पाया गया कि महत्वपूर्ण घटक जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं वह है घर में बालक की भाषा का विकास। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि बालक के शैक्षिक विकास में गृह वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

काम्पबेल (1956) ने यह पाया कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बालक की शैक्षिक प्रगति पर पड़ता है। इसी प्रकार रेडिन एवं एप्सिटीन (1975) ने एक अध्ययन में पाया कि पिता–पुत्र के संबंधों में बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सह संबंध होता है।

इसी प्रकार मित्तल (1966) ने एक अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले बालक परिवार के द्वारा स्वीकृत बच्चे हैं तथा जो छात्र माता–पिता के प्रेममय नियंत्रण के अधीन होते हैं तथा जिनके माता–पिता उनकी अंवाछनीय क्रियाओं में दखल देते हैं वे उच्च उपलब्धि वाले बालक होते हैं। पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि को लेकर शाह एवं शर्मा (1984) ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च, सार्थक व धनात्मक सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार अग्रवाल रेखा (1988) ने बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया। डा0 के0 सी0 मिश्रा (1989) द्वारा निर्मित होम एन्वायरमेंट इन्वेन्टरी का प्रयोग गृह वातावरण के लिए किया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि बालक के शैक्षिक विकास पर घर के वातावरण का प्रभाव सार्थकता प्रदान करता है और एक सीमा तक शैक्षिक उपलब्धि में सुधार और वृद्धि की जा सकती है।

उद्देश्य:

जीवन के कार्य सोद्देश्य होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्य का निर्धारण कार्य को गति प्रदान करना है। छात्र की शैक्षिक उपलब्धि जब असंतोष जनक होती है या जब वांछित उपलब्धि स्तर की प्राप्ति नहीं होती है तब शिक्षक, माता–पिता व छात्र का चिन्तित होना स्वाभाविक है। छात्र के अतिरिक्त अध्ययन हेतु ट्यूशन तथा सहायक पुस्तकों की व्यवस्था कर दी जाती है परन्तु फिर भी कई बार परिणाम आशानुकूल नहीं मिल पाता। आम तौर पर इस सम्बन्ध में बालक के गृह वातावरण की बातचीत ही नहीं की जाती है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के गृह वातावरण का अध्ययन कर शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध स्थापित करना है।

सुझावः

प्रस्तुत अध्ययन माता–पिता के लिये यह सुझाव देते हैं कि बालक की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उठाने के लिये उन्हें चाहिये कि वे उनकी शिक्षा पर ध्यान दें, अध्ययन हेतु उन्हें प्ररित करें, शैक्षिक सामग्रियाँ जो उन्हें चाहिये, उपलब्ध करायें, उनके व्यवहारों पर दृष्टि रखें, संरक्षण प्रदान करें और जहाँ तक सम्भव हो, दण्ड, तिरस्कार, अत्यधिक नियंत्रण, उनकी स्वतन्त्रता पर अंकुश न रखकर एक मार्ग दर्शक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करें। ऐसा करने से बालक परिवार में रहकर स्वयं को सुरक्षित समझेगा तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से कार्य करने को तत्पर रहेगा, अभ्यास करेगा व उसके प्रभाव से वह सन्तोष प्राप्त करेगा।

इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध के परिणाम माता–पिता के दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकने की दिशा में एक छोटा–सा कदम है।

निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि व गृह वातावरण में सम्बन्धों का अध्ययन कर हम इस निष्कर्ष पर हम पहुँचते हैं कि विद्यार्थियों के घर में अच्छा वातावरण मिले तो उनका सर्वांगीण विकास होगा, इसमें माता–पिता के अतिरिक्त शिक्षक की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि शिक्षक ही वह धुरी है जो विद्यार्थियों में समुचित विकास पर सकता है।

आभारः

लेखकगण, प्राधिकारी, सचिव, श्री अनुज मोंटी यादव, निदेशक, डॉ0 संदीप पान्डेय एवं अशॉक हनी यादव, चौ0 सुधर सिंह एजूकेशनल एकेडमी, जसवन्तनगर, इटावा के उचित मार्गदर्शन में यह कार्य सम्पन्न किया गया जिसके लिये लेखकगण अत्यधिक कृतज्ञ हैं।

इसके अतिरिक्त डॉ0 संदीप पान्डेय, निदेशक, चौ0 सुधर सिंह एजूकेशनल एकेडमी, जसवन्तनगर, इटावा ने मेरे शोध पत्र लिखने के दौरान उत्साहवर्धन कर आर्थिक सहायता हेतु सहयोग किया जिसके लिये लेखकगण धन्यवाद देते हैं।

संदर्भ सूचीः

1. अग्रवाल रेखा (1988): बालकों की शैक्षिक निन्यर्तत पर पारिवारिक दशा का प्रभाव।
2. मिश्रा करुणाशंकर (1989): होम एन्वायरमेंट इन्वेन्टरी।
3. राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अजमेर।
4. यूनिवर्सिटी न्यूज दिल्ली।
5. जनरल ऑफ हायर एजुकेशन, यू0जी0सी0, दिल्ली।
6. साहित्य परिचय, आगरा।
7. टीचर एजुकेशन, इलाहाबाद।